कृषि संचालन का कैलेंडर

अदरक

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान
कोषिक्कोड-673012, केरल, भारत

संकलन एवं संपादन
सी. के. तंकमणी
आर. दिनेश
सी. एन. बिजु

प्रकाशक
निदेशक
भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान
कोषिक्कोड, केरल, भारत

हिंदी रूपांतर
एन. के. लीला
के. अनीस
एन. प्रसन्नकुमारी

उद्धरण
सी. के. तंकमणी, आर. दिनेश और सी. एन. बिजु।
अदरक का संचालन समय, भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड, केरल, भारत।

दिसंबर 2021

वित्तीय सहायताः भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान, कोषिक्कोड

आवरण पृष्ठ डिज़ाइनः सुधाकरन ए.

संचालन का कैलेंडर- हल्दी

जनवरी	➢ बीज के लिए चिह्नित प्रकंदों को कुदाल के द्वारा खोद लेना। ➢ कटाई के एक महीने पहले सिंचाई बंद करना। ➢ पानी में बीज प्रकंदों को अच्छी तरह साफ करना। उसमें पड़े हुए पत्ते और जड़ों को निकाल देना। बीज संभरण ➢ जैविक उत्पादन के लिए प्रकंदों को बोर्डो मिश्रण (1%) के घोल या *ट्राइकोडर्मा हर्ज़ियानम* या *टी. विरिडे* के घोल में 20 मिनट डुबोकर रखने के बाद जलांश को मिटाना, छाया में सुखाना। ➢ बीज के लिए चयनित प्रकंदों को मेन्कोज़ेब (0.3%) और क्विनालफोस (0.075%) के साथ 30 मिनट उपचारित करके छाया में सुखाना। ➢ उपचारित प्रकंदों को सूखे रेत और बुरादा रखे हुए गड्ढे में संचित किया जाता है। 2 से. मी. मोटाई में रेत या बुरादा बिछाना और फिर उसके ऊपर 30 से. मी. ऊंचाई में प्रकंदों को रखने के बाद उसके ऊपर एक छिद्र वाले लकड़ी के शीट से ढँक देना। ➢ संग्रहित प्रकंदों का निरीक्षण करना चाहिए और यदि कोई सड़े हुए है तो उसे नियमित अंतराल में निकाल देना।
फरवरी	➢ नियमित अंतराल में संग्रहित प्रकंदों की जांच करना और कीट और रोग संक्रमण है तो उसे निकाल देना चाहिए।
मार्च	➢ हल्दी के बीज पौधों को प्रोट्रे तकनीकी द्वारा बनाया जा सकता है। ➢ अगली खेती के लिए भूमि की तैयारी मार्च में की जानी चाहिए। पिछले फसलों के अवशिष्टों को हटाकर जलाना और अच्छी तरह जोत कर मिट्टी को धूल बनाकर साफ करना। ➢ नियमित अंतराल में संग्रहित प्रकंदों की जांच करना और कीट और रोग संक्रमित को हटा देना
अप्रैल	➢ मिट्टी की पीएच < 6 है तो 1-2 टन/हेक्टर की दर से चूना डाल दें। ➢ गर्मियों की बारिश मिलने के बाद प्रकंदों का रोपण करने के लिए बेड तैयार किया जा सकता है। ➢ बेडों को 1 मीटर विस्तार, 25 से. मी. ऊंचाई और सुविधानुसार लंबाई में तैयार किया जाय। ➢ बेडों के बीच जल निकास का चैनल होना चाहिए। ➢ सिंचित फसलों के लिए, बेड की दूरी 40 से. मी. और पौधों के बीच की दूरी 20-25 से. मी. होनी चाहिए। ➢ एफवाईएम/कम्पोस्ट 30 टन और सूपर फोस्फेट प्रति हेक्टर 310 किलोग्राम पौधे के थालों में डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिश्रित करना चाहिए। ➢ जैविक हल्दी के उत्पादन में सूपरफोस्फेट के बदले 280 किलोग्राम रॉक फोस्फेट का प्रयोग किया जाता है। ➢ हल्दी का रोपण करने का उत्तम समय गरमी की बारिश प्राप्त होने के बाद अप्रैल का पहला पक्ष होता है।

	➢ स्वस्थ प्रकंदों को एक मुकुल वाले लगभग 20-25 ग्राम के टुकड़े टुकड़े करके बेडों में रोपण किया जा सकता है। ➢ जैविक उत्पादन में, प्रकंदों को जीआरबी 17 या *ट्राइकोडर्मा* घोल में भिगो दिया जाता है। ➢ बीज प्रकंदों को रोपण के आधा घंटा पहले 0.1% क्विनालफोस 0.3% मैन्कोज़ेब में डूबोकर रखना चाहिए। ➢ प्रकंदों का रोपण करने के बाद प्रत्येक बेड में हरे पत्तों और अन्य जैविक वस्तुओं से 15 टन / हेक्टर की दर से बेडों पर पलवार करें। ➢ उर्वरक लगाने के बाद पलवार करके मिट्टी उठाना चाहिए।
मई	➢ उर्वरक लगाने से पहले खरपतवार को अलग करना चाहिए। ➢ रोपण के बाद 45 दिन होने पर प्रति हेक्टर 65 किलोग्राम यूरिया और 100 किलोग्राम मूरट ऑफ पोटाश का प्रयोग करें। जैविक हल्दी के उत्पादन के लिए रोपण के 45 दिनों के बाद 1 टन/हेक्टर की दर से राख और 2 टन/हेक्टर की दर से कम्पोस्ट लगा दें। ➢ खरपतवार को निकालना, उर्वरक लगाना, पलवार करना आदि के बाद मिट्टी उठाना चाहिए।
जून-जुलाई	➢ खरपतवार के आधिक्य के अनुसार उसे हटाना चाहिए। ➢ खेत को पानी के जमाव से बचा दें। ➢ रोपण के 90 दिनों के बाद, दूसरी मात्रा के रूप में प्रति हेक्टर 65 किलोग्राम यूरिया और 40 किलोग्राम मूरट ऑफ पोटाश का प्रयोग करें। ➢ जैविक हल्दी का उत्पादन करने के लिए रोपण के 90 दिनों के बाद 2 टन/हेक्टर की दर से वर्मीकम्पोस्ट और 100 किलोग्राम/हेक्टर की दर से पोटैश लगा दें। ➢ उर्वरक लगाने के बाद थालों में पलवार करना चाहिए। ➢ प्ररोह बेधक का प्रबंधन करने के लिए एक एकीकृत तरीका, जिसमें रोगबाधित प्ररोहों के काट-छांट भी शामिल है, और 0.05% डायमेथोयट का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। ➢ जैविक उत्पादन में डायमेथोयट के बदले 0.6% नीमगोल्ड का छिड़काव करना चाहिए। ➢ उर्वरक लगाने के एक हफ्ते के बाद हल्दी सूक्ष्मपोषण मिश्रण को 5 ग्राम प्रति लिटर पानी की दर से छिड़काव करना। ➢ प्रकंद गलन या कोई रोग संक्रमण है तो पौधों को निकाल दें। ➢ खेत में प्रकंद गलन का संक्रमण दिखाई पड़ते समय, रोग संक्रमित क्लंप को निकालना और रोग व्यापन की जांच करके संक्रमित बेड एवं उसके चारों ओर मेन्कोज़ेब 0.3% या काप्टाफोल 0.3% या मेटालक्सिल-मेन्कोज़ेब 0.125% को ड्रंच करना। ➢ दूसरे बेड की ओर रोग व्यापन को रोकने के लिए सभी बेडों में वही रासायनिक के साथ ड्रंचिग किया जाना चाहिए।

अगस्त-सितंबर	➢ खरपतवार को बेडों से हटा देना चाहिए। ➢ हल्दी में उर्वरक की दूसरी मात्रा लगाने के एक हफ्ते के बाद के सूक्ष्मपोषण मिश्रण को 5 ग्राम/लिटर पानी की दर से दूसरी बार पत्तों पर छिड़काव किया जा सकता है। ➢ खेत को पानी के जमाव से बचा दें। ➢ प्रकंद गलन रोग है तो संक्रमित पौधों को जड़ से उखाड़ने के बाद बेडों में कोपर ओक्सिक्लोराइड 0.2% या मेटालक्सिल मेन्कोज़ेब का ड्रेंचिंग किया जाय।
अक्तूबर-नवंबर	➢ अगले मौसम हेतु बीज प्रकंदों को संचित करने के लिए स्वस्थ बेडों को अंकित करना।
दिसंबर	➢ हल्दी के पत्ते सूखने लगते समय कटाई की जा सकती है। ➢ कटाई के एक महीने पहले सिंचाई बंद करना चाहिए। ➢ एक कुदाल के द्वारा खोदकर प्रकंदों को लेना, उसमें पड़े हुए मिट्टी, जड़ और पत्तों को हटाना। फिर साफ पानी में अच्छी तरह धोकर साफ करना। ➢ बीज के लिए प्रकंदों को परिरक्षित करने के बाद साफ किये बाकी प्रकंदों को पानी में उबालकर सूर्य प्रकाश में या यांत्रिक ड्रायर में सुखाने के बाद विपणन से पहले पोलिश किया जाना चाहिए। ➢ इसको ग्रेड करके पोलीथीन बैग में पैक करना चाहिए। ➢ सूखे हल्दी को संचित करते समय, वायु से नमी का आगिरण करने से बचा दें और हल्दी के बैग को लकडी के फर्श पर और पार्श्व दीवार से 50-60 से.मी. दूर रखने पर ध्यान दिया जाय।

संपर्क के लिए

भाकृअनुप-भारतीय मसाला फसल अनुसंधान संस्थान

पोस्ट बैग 1701, मेरिकुन्नु पी.ओ.

कोषिक्कोड-673012, केरल, भारत

दूरभाषीः 0495 2731410, फैक्स-0091-495-2731187

ई-मेलः director.spices@icar.gov.in,

वेब साइटः www.spices.res.in

भाकृअनुप
ICAR

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

Agrisearch with a human touch